प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

आचार्य महाप्रज्ञ के 91वीं जन्म जयंती

मनुष्य स्वयं को देखने का अभ्यास करे : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 10 जुलाई , 2010

मनुष्य दूसरों को देखता है हमारी आंखे दूसरों को देखने के लिए अभ्यस्थ हो गई है, स्वयं को देखने के लिए दर्पण की आवश्यकता होती है। मनुष्य स्वयं को देखने का अभ्यास करे। बौद्ध साहित्य के महान ग्रंथ धम्मपद का उल्लेख करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि धम्मपद बहुत ही आध्यात्मिक ग्रंथ प्रतीत होता है। धम्मपद और उत्तराध्ययन के तुलनात्मक रूप में यह प्रेरणा आचार्य महाप्रज्ञ ने दी।

उक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण ने श्रीसमवसरण में आचार्य महाप्रज्ञ के 91वें जन्मोत्सवर पर आयोजित कार्यक्रम 'प्रज्ञा दिवस' पर व्यक्त किये।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने मुझे यह प्रेरणा दी कि गीता पर प्रवचन दो, मैंने उसे शिरोधार्य कर उसके साथ धम्मपद को और जोड़ दिया। प्रेक्षाध्यान का सिद्धांत है अपने आपको देखने का अभ्यास करो, आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने से अपने को देखने की बात कही, अनेकों लोगों को उन्होंने संबोध दिया, उनमें मैत्री, माधुर्य, प्रेम, मैत्री का दर्शन होता है। अनुकंपा का मतलब दया की चेतना का बंध होता है। अनुकंपा से सुख मिलता है, अनुकंपा है तो सम्यकत्व का एक लक्षण आ जाता है। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ में दया, अनुकंपा की भावना थी वे हर व्यक्ति के दु:ख को सुनते, दु:ख को दूर की करने का प्रयास करते, जिसमें अनुकंपा होती है वह दूसरों के दु:ख को दूर करने का प्रयास करता है।

उनमें ज्ञान का विकास था, उनका काफी हिस्सा ज्ञान की आराधना में बिता, उनकी ज्यादा लग्न ज्ञान को आराधना में रहती वे स्वयं भी ज्ञान की आराधना करते और दूसरों को भी ज्ञान की आराधना करवाते। आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा मैं शुरू से ही उनके साथ ज्ञाना आराधना में जुड़ा, ज्ञान शिक्षा के साथ प्रबंधन में मुझे जोड़ा था। उन्होंने 7 वर्षों की अहिंसा यात्रा की उनका स्नेह का भाव सामने आता, वे अपेक्षानुसार सबको समय देते।

इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण ने आचार्य महाप्रज्ञ की सेवा में रहने वाली साध्वी शुभप्रभा को शासन सेवी, मुनि राजेन्द्र कुमार को शासन सेवी संबोधन से संबोधित किया। व्यवहार कुशल, साहित्य प्रतिभा, चिंतन शक्ति का उल्लेख करते हुए मुनि धनंजय कुमार को 'शासन गौरव' संबोधन से संबोधित किया।

अहिंसा पथ के महापथिक का लोकार्पण

सरदारशहर 10 जुलाई , 2010

आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ की 91वीं जन्म जयंति पर केबीडी फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित 'अहिंसा पथ के महापथिक' पुस्तक का लोकार्पण किया गया। सुरेन्द्र दुगड़, कमल दुगड़ ने पुस्तक की जानकारी देते हुए अपने विचार रखे। इस अवसर पर बंगाल से समागत सांसद सोमेन्द्रनाथ मित्र, सुदीप बन्दोपाध्याय, राजस्थान पर्यटन मंत्री राजेन्द्रसिंह गुडा, बीकानेर के महाराजा रविराजसिंह राठौड़ एव राजस्थान पत्रिका के संपादन गुलाब कोठरी मुख्य रूप से उपस्थित होकर अपने विचार व्यक्त किये।

आचार्य महाप्रज्ञ की आत्मकथा 'यात्रा एक अकिंचन की' लोकार्पण

मानवता के मसीहा आचार्य महाप्रज्ञ की आत्म कथा 'यात्रा एक अकिंचन की' शीर्षक से उनकी 91वीं जन्म जयंती पर विमोचित की गई। आज आचार्य महाप्रज्ञ के उत्तराधिकारी एवं तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में श्रीसमवसरण में आयोजित 'प्रज्ञा दिवस' पर होने वाले जन्म जयंती समारोह में विमोचन की गई।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा एवं मुनि धनंजय कुमार के प्रयासों से जैन विश्व भारती प्रकाशन विभाग के द्वारा पाठकों के सम्मुख पेश की गई, कृति को लोकार्पण राजस्थान पत्रिका के संपादक गुलाब कोठारी, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया ने आचार्यश्री महाश्रमण को भेंट की।

इससे पूर्व डायमंड बुक्स दिल्ली द्वारा साधना यश पत्रिका ने आचार्य महाप्रज्ञ के 91वीं जन्म जयंति पर विशेषांक प्रकाशित किया गया। पत्रिका के संपादक शशिकांत सदैव, राजेश जैन 'चेतन' अरविन्द गोठी, नरेश शांडिल्य, इन्द्र बैंगानी ने उपस्थित होकर पूज्यवरों को भेंट की, उल्लेखनीय है कि 'साधना यश' मासिक पत्रिका की सवा लाख प्रतियां प्रकाशित होती है। इस अवसर पर अंग्रेजी में प्रकाशित 'विज्ञान अध्यात्मक की ओर' पुस्तक का विमोचन किया गया।

इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ चातुमास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी, उपाध्यक्ष राजकरन सिरोहिया, स्वागताध्यक्ष बिमलकुमार नाहटा, स्थानीय सभा अध्यक्ष अशोक नाहटा ने आए हुए विशिष्ट अतिथियों का साहित्य भेंट कर स्वागत किया, महामंत्री रतन दूगड़ ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

शीतल बरड़िया
(मीडिया संयोजक)